कैंसर के इलाज में अब गेम चेंजर

हाल ही में उच्च रक्तचाप से ग्रसित 65 वर्षीय एक महिला के अंडाशय में फैले कैंसर का उपचार किया गया, जबकि कैंसर चौथी स्टेज में था, महिला का अंडाशय गंभीर रूप से कार्सिनोमा (एक प्रकार का कैंसर) की चपेट में था और वह महिला इसके इलाज के लिए तीन बार कीमोथैरेपी भी करवा चुकी थी। साथ ही यह कैंसर अप-अपेंडिक्स के कैंसर, अमाशय व मलाशय के कैंसर के रूप में भी शरीर में फैलता जा रहा था। नई दिल्ली स्थित बीएलके सुपर स्पेशलिटी हास्पिटल के डा.कपिल कुमार का कहना है कि कार्सिनोमा एक तरह का कैंसर ही है, जो पेट के खाली हिस्से की एपिथेलिअल सेल्स में होता है। पेट के किसी भी हिस्से में कैंसर हो होने पर वह पेट के निचले हिस्से यानी पेरिटोनियम तक फैल जाता है। इस प्रकार के कैंसर को पेरिटोनियल कार्सिनोमेटोसिस कहा जाता है। इसे अभी तक लाइलाज बीमारी माना जाता रहा है, आमतौर पर इसका पता काफी देर के बाद चलता है, तब तक कैंसर पूरी तरह फैल चुका होता है। पूरी तरह जांच करने के बाद इस महिला का एक नई तकनीक सीअरएस (साइटो रिडक्टिव सर्जरी) और उसके साथ-साथ एचआईपीईसी (हाइपर थर्मिक इंट्रा पेरिटोनियल कीमोथैरेपी) के द्वारा मल्टीपल सर्जरी से इलाज किया गया, क्योंकि कीमोथैरेपी की हीट ट्यूमर के ऊतकों में बहुत सीमित दूरी तक पहुंचती है। यह बहुत जरूरी है कि एचआईपीईसी करने के पहले जितने ऊतक ट्यूमर से प्रभावित हैं, उन्हें निकाल दिया जाए। पेट में जो ट्यूमर डिपॉजिट्स होते हैं उन्हें निकालने के लिए साइटोरिडक्टिव सर्जरी की जाती है।

साइटोरिडक्टिव सर्जरी एक जटिल सर्जिकल प्रक्रिया है, जिसके द्वारा कुछ अंग निकाल दिये जाते हैं। डा. कुमार का कहना है कि सर्जरी में अधिकतर 10-12 घंटे लगते हैं, उससे पहले जब मरीज एचआईपीईसी के लिए तैयार होता है। इसमें कितना समय लगेगा यह इस पर भी निर्भर करता है कि कार्सिनोमा कितना गंभीर है और कितना फैल चुका है। इस तकनीक के द्वारा जिन रोगों का उपचार किया जाता है, उनमें सुडोमायक्सोमा पेरिटोनीई, मेसोथेलियोमा, आंत व मलाशय के कैंसर, अपेंडिक्स का कैंसर, गैस्ट्रिक कैंसर, अंडाश्य का कैंसर और प्राइमरी पेरिटोनियल कैंसर शामिल हैं।